nwda.gov.in

जागरण विशेष

यशस्वी प्रधान

समस्या के निदान संग गांव को दिया स्वावलंबन का मंत्र

प्रधान अंजली राय के प्रयास से उप्र में बलिया के देवकली गांव की बदली छवि, विकास संग आय अर्जन भी

संजीर तिवारी • बलिया

संकल्प नए विचारों को जन्म देते हैं जिनसे लक्ष्य प्राप्ति संभव होती है। इसे साबित कर दिखाया है उत्तर प्रदेश के बलिया शहर से सटे हनुमानगंज विकास खंड के देवकली गांव की प्रधान अंजली राय और वहां के निवासियों ने। पक्की सड़क, नाली-खड़ंजा, साफ-सफाई, सिंचाई की सुविधा दूर की कौड़ी थी। वर्ष 2021 में प्रधान बनी अंजली ने मूलभूत जरूरतों व सुविधाओं के साथ स्वावलंबन को भी महत्व दिया। परिणाम यह कि शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता के साथ आय अर्जन की नई राह खुली है।

जलकुंभी से बन रही खाद: देवकली बलिया जिले का पहला गांव है, जहां जलकुंभी से जैविक खाद तैयार की जा रही है। इसकी बिक्री से पंचायत की आय बढ़ी। यह पैसा विकास कार्यों में लगाया जाता है। बलिया में सुरहा ताल एवं गंगा नदी को जोड़ने वाले नाले के दोनों तरफ बसे गांवों के लिए जलकुंभी बड़ी समस्या रही है। जिला प्रशासन ने जलकुंभी को पूरी तरह निकालने की योजना बनाई। एमए तक शिक्षित अंजली राय ने इससे जैविक खाद बनाने का विचार किया। इसके लिए जलकुंभी को कंपोस्ट पिट में भरने के बाद गोबर का 25 प्रतिशत अंश मिलाकर छोड़ दिया गया। अलग-अलग पिट महिला स्वयं सहायता समूहों को आवंटित कर दिए गए। 90 दिनों में खाद तैयार हो गई। गांव में जलकुंभी से तैयार जैविक खाद वन विभाग की नर्सरियों में 13 रुपये प्रति किलो की दर से आपूर्ति की गई। इससे महिला स्वयं सहायता समूहों एवं पंचायत को आर्थिक संबल मिला। अब खाद किसानों को भी बेचने की तैयारी है।

जल संरक्षण का उदाहरण बना शिव मंदिर: देवकली गांव स्थित अति प्राचीन विमलेश्वर नाथ महादेव मंदिर आज आस्था के साथ जल संरक्षण का उदाहरण बन गया है। एक वर्ष पहले तक भोले बाबा को चढ़ाया जाने वाला जल सड़क पर बहता था। प्रधान ने इसके सदुपयोग की व्यवस्था की है। मंदिर के पास दो सोखतों का निर्माण कराया गया है। प्राचीन कुएं का जीर्णोद्धार कराया गया है। रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम का निर्माण भी चल रहा है। गांव का अमृत सरोवर भी पूर्ण हो चुका है।

सुविधायुक्त विद्यालय, आरसीसी सड़कें

देवकली गांव की पक्की गली।

देवकली गांव में कच्ची सड़कें कीचड़ में सनी रहती थीं। पानी जमा न हो, इसलिए नालियां बनवाई गईं। पानी नाले तक पहुंचाने के लिए पाइपलाइन बिछी है। आरसीसी सड़कें बनी हैं। रात में स्ट्रीट लाइट की रोशनी से गांव जगमग रहता है। खूबसूरत पंचायत भवन, सुविधायुक्त सरकारी विद्यालय, कक्षाओं में डेस्क-बेंच, टाइल्स और वाई-फाई की सुविधा से पढ़ाई के प्रति बच्चों की रुचि भी बढ़ी है।

बलिया के देवकली गांव में बना अमृत सरोवर (ऊपर) व जलकुंभी से बनी खाद एकत्र करते ग्रामीण • जागरण

शासन की हर योजना का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचाने का पूरा प्रयास रहता है। ग्रामीणों से राय-मशविरा कर विकास कार्य कराए जाते हैं। देवकली को आदर्श ग्राम पंचायत बनाने का लक्ष्य है।

अंजली राय, ग्राम प्रधान, देवकली, बलिया

विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें।